Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-A

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-9308 January, 2023
Impact Factor – 8.575
ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January -2023

ISSUE No - (CCCLXXXIII) 383 -A

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. M.N. Kolpuke
Principal,
Executive-Editors
Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga Dist. Latur

Dr. Govind G. Shivshette
Editors
Department of Hindi Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga

Aadhar International Publication
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

279

21	स्वाधीनता संग्राम में हिंदी भाषा की भूमिका	डॉ.शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद	73
22	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता	डॉ. देविदास भिमराव जाधव	77
23	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य	डॉ. भगवान गव्हाडे	81
24	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास	डॉ. श्रीराम हनुमंत वैद्य	85
25	हिन्दी उपन्यासों में स्वाधीनता आन्दोलन का चित्रण	शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम	89
26	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास	प्रा.डॉ. सावते प्रकाश नवनितराव	92
27	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में भारतेन्दु हरिषचन्द्र के नाटकों का योगदान	डॉ. मनीषा शर्मा	95
28	निराला के काव्य-में स्वाधीनता की भावना	प्रा.डॉ. प्रवीण कांबळे	100
29	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी भाषा	प्रा. डॉ. बालिका रामराव कावंळे	103
30	हैदराबाद मुक्ति आंदोलन में हिंदी कविताओं का योगदान	प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र	107
31	स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका	डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड	112
32	भारतेन्दुयुगीन निबंध साहित्य में चित्रित स्वाधीनता आंदोलन	डॉ. सुजितसिंह परिहार	117
33	स्वाधीनता आंदोलन के आलोक में 'शिव शंभू के चिट्ठे' की महत्ता	प्रा.डॉ. संतोष कुमार गुंडप्पा गाजले	121
34	स्वधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा	डॉ. पटेल माजिद भिकन	124
38	तार सप्तक काव्य में राष्ट्रीय चेतना	प्रा. साईनाथ कोरेबोईनवाड	127
35	शहादत एकांकी में राष्ट्रिय चेतना	प्रा सुधाकर वाघमारे	131
36	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता	प्रा. डॉ. सुभाष क्षीरसागर	134
37	भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों में राष्ट्रीयभावना	प्रा. डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव	137
38	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और सुमित्रानंदन पंत का मुक्तियज	डॉ मुकुंद कवडे	141
39	माखनलाल चतुर्वेदी की कविता में राष्ट्रीयता का स्वर	डॉ. प्रिया ए.	145
40	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी सिनेमा का योगदान	डॉ.जी.बी.उषमवार	148
41	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान	धनराज शिवदास बिराजदार	150

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-9308
January, 2023

स्वाधीनता संग्राम में हिंदी भाषा की भूमिका

डॉ.शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद
(हिंदी विभाग प्रमुख)हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हिमायतनगर नांदेड,मो.9404639785

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी का बड़ा महत्व रहा है। महात्मा गांधी गुजराती थे, सी.गोपालचारी मद्रासी थे, राजा राम मोहनराय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और देवी प्रसाद ये सारे महान दार्शनिक क'ा०ंतिकारी बंगाली थे, ऐसे ही देश के अलग-अलग प्रांतो के क'ा०ंतिकारियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को खपा दिया। इन सारे दार्शनिक और क'ा०ंतिकारियों ने स्वाधीनता का संदेश देशभर में जन-जन तक पहुँचाने के लिए हिंदी को चुना। राष्ट्र निर्माण की दिशा में काम करनेवाले बुद्धिजीवियों की राय है कि सभी क्षेत्रिय बोलियों का परस्पर सम्मान होना चाहिए। सबकी एकराय होनी चाहिए कि हिंदी सभी क्षेत्रीय भाषाओं की बड़ी बहन है। हिंदी को अधिक ताकत देकर देश को अधिक ताकतवर बनाया जा सकता है। हिंदी के लिए काम करनेवाले विद्वानों ने अपने विचार साझा किए है।

कड़वी सच्चाई है कि हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, लेकिन सरकारी विभागों में काम करने का दिखाया हो रहा है। अधिकतर अफसरशाही अँग'ेजी में काम कर रहे है। 14 सितंबर 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है और वह क्यों मनाया जाता है, यह सर्वविदित है। हिंदी के राष्ट्रभाषा के रूप में लोकप्रिय और सर्वमान्य बनाने में और फिर भारत की राजभाषा बनने में कई शताब्दियाँ लगी है। राजभाषा के रूप में हिंदी को जो मान्यता दी गयी उसमें स्वतंत्रता संग'ाम के हमारे राजनेताओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी दोनों दायित्वों का निर्वाह करती रही है। जनता और सरकार के बीच संवाद स्थापना के क'म में जब फारसी या अँग'ेजी के माध्यम से दक्कतें पेश हुई तो कंपनी सरकार ने फोर्ट विल्यम कॉलेज में हिंदुस्थानी विभाग खोलकर अधिकारियों को हिंदी सिखाने की व्यवस्था की। यहाँ से हिंदी पढ़े हुए अधिकारियों ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देखकर मुक्तकंठ से हिंदी को सहारा है। हिंदी की सर्वव्यापकता ही वह गुण है जिसने अँग'ेज अधिकारियों का ध्यान हिंदी की ओर खिंचा।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संयुक्त प्रदेश के सदर बोर्ड के एक इश्तहार नामें का हवाला देकर बतलाया है कि, "सन 1836 में देवनागरी लिपि वाली हिंदी सरकारी दफ्तरों की भाषा बना दी गई थी पर मुसलमान भाइयों के विरोध के कारण हिंदी चल नही पाई। फलत: 1837 ई.स. में उर्दु दफ्तरों की भाषा बना दी गई।"1 निष्कर्षत: कह सकते है कि अँग'ेजों ने हिंदी की संभावनाओं की ओर हमारे साहित्यकारों एवं राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान खींचा।

हिंदी राष्ट्रीय पुनर्जागरण की भाषा थी। संपूर्ण भारतीय स्तर पर जनता का संपर्क सिर्फ हिंदी में ही हो सकता था। राष्ट्रीय एकता के लिए ब'म्हा समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय भी हिंदी के ही पक्ष धर थे। उन्होंने ही सन 1929 इ.में 'बंगदूत' अखबार निकालने का श्रेय भी उन्हें ही है। केशव चंद्र सेन ने अपने पत्र 'सुलभ समाचार' में 1873 में एक लेख लिखा था-"भारतीय एकता कैसे हो" फिर उन्होंने लिखा-"उपाय है सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार और जितनी भाषाएँ भारत में प्रचलित है, उनमें हिंदी भाषा लगभग सभी जगह प्रचलित है। यह हिंदी अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनायी जाय, तो यह काम सहज की, और शीघ' संपन्न हो सकता है।" इनके अलावा अन्य अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने प्रांतीयता की भावना से ऊपर उठकर मुक्तकंठ से हिंदी का समर्थन किया, जिनकी हिंदी सेवा अविस्मरणीय रहेगी।

B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-9308
January, 2023

स्वाधीनता संग'ाम के इतिहास में बाल गंगाधर तिलक का विशेष स्थान है। उनके विचारानुसार हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी के समर्थन में उन्होंने 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में लिखा था, "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वसामान्य लिपि के प्रचार के लिए नही हैं, यह तो उस आंदोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूँगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है, अतएव यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों कोठे एक दूसरे के निकट लाना चाहें तो सबके लिए समान भाषा के बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नही है"3 तिलक ने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने के लिए सन 1903 में 'हिंदी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया और इस बात का परिचय दिया कि जन साधारण तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए केवल हिंदी ही एक सरल और सशक्त माध्यम है। साथ ही तिलक ने अँग'ठेजी की बजाय हिंदी में भाषण देने की परंपरा देने की परंपरा आरंभ कर अन्य नेताओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

सन 1885 ई.में काँग'ठेस की स्थापना हुई। जैसे-जैसे काँग'ठेस का राष्ट्रीय आंदोलन जोर पकड़ता गया, वैसे-वैसे राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय झंडा एवं राष्ट्रभाषा की संकल्पना भारतीयों के मन में बध्दमूल होती गई। काँग'ठेस के राष्ट्रीय आंदोलनसे जुडे हुए पहले समर्थ व्यक्ति के रूप में बाल गंगाधर तिलक का ही नाम आता है। कानपुर में जनता द्वारा अपने स्वागत के प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा था, "यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते है और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।"

महात्मा गांधी भाष के पक्ष को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग'ाम के प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने प्रारंभ से हिंदी कोठे स्वतंत्रता संग'ाम की भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। उनका कहना था, कि, "पराधीनता चाहे राजनीतिक क्षेत्र की अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा परमुखापेक्षी बनाये रखने वाली है।"3 सन 1917 में उन्होंने एक परिपत्र निकाल कर हिंदी सीखने के कार्य का सूत्रपात किया। गांधीजी की प्रेरणा से 1925 में काँग'ठेस ने यह प्रस्ताव पास किया कि काँग'ठेस का, काँग'ठेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का कामकाज आमतौर पर हिंदुस्तानी में चलाया जाएगा। इसी का परिणाम था कि सन 1925 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य संम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरूदेव रविंद्रनाथ ठाकुरर ने की और उन्होंने हिंदी में बोलकर हिंदी का प्रबल समर्थन किया।

गाँधीजी हिंदी के प्रश्न को स्वराज्य का प्रश्न मानते थे। वे गैर हिंदी भाषी पहले और अखिरी सर्वमान्य राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सामने रखकर भाषा समस्या पर गंभीरता से विचार और 1917 के भड़ोच में आयोजित गुजरात शिक्षा परिषद के अधिवेशन में राष्ट्रभाषा के लिए पांच शर्ते बतायी। गाँधीजी के स्वदेशी आंदोलन ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के स्वीकार को सार्वजनिक बनाया। अँग'ठेजी के विकल्प के रूप में हिंदी सामने आयी। मोतिहारी के किसान आंदोलन के पश्ताच गाँधी जी देश के शीर्षस्थ नेता हो चुके थे। उन्होंने हिंदी को सिध्दांत एवं व्यवहारदोनों स्तरों पर अपनाया। पहले उन्होंने हिंदी सीखी, फिर दूसरों को अपनाने की सलाह दी। 1927 में उन्होंने लिखा-"वास्तव में ये अँग'ठेजी में बोलनेवाले नेता है जो आम जनता में हमारा काम जल्दी आगे बढ़ने नही देते। वे हिंदी सीखने से इनकार करते हैं जबकि हिंदी द्रविड़ प्रदेश में भी तीन महिने के अंदर सीखी जा सकती है।"4

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विभिन्न राज्यों में हिंदी-प्रचार करने के लिए नेताओं को जहाँ प्रेरित किया वहीं लोगों के अलग-अलग जत्थे को राज्यों में भेजा। उन्होंने खुद अपने बेटे श्री देवदास गाँधी को हिंदी-प्रचार के लिए भारत के दक्षिण में भेजा था। आजाद्री के इस मुहिम में इसे पुनीत कर्तव्य मानकर विभिन्न राज्यों में विभिन्न हिंदी-प्रचारक गए और वहाँ उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। राष्ट्रीय आंदोलन में शिरकत करते हुए राष्ट्रीय चेतना

282

से युक्त हमारे ये हिंदी प्रचारक आजाद्री में और आजादी के बाद भी लोगों को जागृत करते हुए उनके बीच हिंदी का प्रचार-प्रसार करते रहे।

गाँधीजी वैसे नेताओं से परेशान थे जो जनता की बात सबसे अधिक करते थे किंतु राजनीतिक कार्यवाहियों में जनता की उपेक्षा करते थे। भारतीय स्वाधीनता की माँग अँग'ेजी भाषा में करनेवाले उन्हें ढोंगी लगते थे। उन्होंने कहा है,"यदि स्वराज्य अँग'ेजी पढ़े भारतवासियों का है और केवल उनके लिए है तो संपर्क भाषा अवश्य अँग'ेजी होगी। यदि वह करोड़ो भूखे-लोगों, करोड़ो निरक्षर स्त्रियों, सताए हुए अछूतों के लिए है तो संपर्क केवल हिंदी हो सकती है।"5 गाँधीजी जनता की बात जनता की भाषा में करना चाहते थे। उन्हीं के प्रयत्नों से तमिलनाडु में हिंदी के प्रति ऐसा उत्साह प्रवाहित हुआ कि प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिंदी का समर्थन करने लगे। यह वह समय था जब चक'वती राजगोपालचारी जैसे नेता हिंदी के प्रचार को अपना भरपूर सहयोग दे रहे थे। इसी कारण सन 1937 में देश के कुछ राज्यों में भारतीय राष्ट्रीय काँग'ेस का मंत्रिमंडल गठित हुआ। इन राज्यों में हिंदी की पढ़ाई को प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया गया, किंतु राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के विकास का कोई ठोस परिणाम सामने नही आया। क्योंकि महात्मा गांधी के अलावा प्राय: नेता हिंदी को व्यवहार में उतारने की इच्छा नही रखते है। जहाँ वहाँ यदि वे हिंदी का व्यवहार करते थे तो मात्र औपचारिकता के लिए।

गाँधीजी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में और सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने वर्धा एवं मद्रास से राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ स्थापित की। उन्हीं की प्रेरणा से विद्यापीठों एवं हिंदी साहित्य संम्मेलनों की ओर से हिंददी में परीक्षाएँ आयोजित की गई। गाँधीजी ने ऐसा माहौल बना दिया था कि हर कोई हिंदी को अपना लिया। इसी कारण राष्ट्रीय हस्तियाँ तन-मन से हिंदी की सेवा में जुट गई। इस कार्य में काका कालेलकर एवं विनोबा भावे के नाम अँग'ेजी रुप में आते है। सुभाषचंद्र बोस ने सन 1929 में अपना भाषण हिंदी में देते हुए हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलाने की बात की। उन्होंने कहा कि, "प्रांतीय ईर्ष्या - द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नही मिल सकती। अपनी प्रांतीय भाषाओ की भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नाहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही करत सकते है। पर सारे प्रांतों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी या हिंदुस्तानी को ही मिला है।"6

स्वंतत्रता संग'ाम के इतिहास पुरूष के रूप में वि'यात पंडित मदनमोहन मालवीय जी का नाम हिंदी प्रचारको में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। वे एक महान और हिंदी आंदोलन के अग'णी नेता भी थे। हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में उन्होंने हिंदी की अभूतपूर्व सेवा की। यह उन्ही का प्रोत्साहन, समर्थन और प्रेरणा थी जिसकी बदौलन हिंदी प्रशासन एवं राजकाज की भाषा बनी। हिंदी सेवा का उनका संकल्प था। उनके ेसार्वजनिक जीवन की सकि'यता, उनके आदर्श और उनकी योजनाएँ इसी संकल्प से प्रेरित थी। सन 1986 के काँग'ेस अधिवेशन में मालवीय जी के भाषण से प्रभावित होकर कालाकांकर के राजा नेे अपने हिंदी दैनिक 'हिंदुस्तान' का उन्हें संपादक बनाया उसके बाद में प्रयोग से 'मर्यादा' नाम हिंदी पत्रिका तथा सन 'अभ्युदय' साप्ताहिक का प्रारंभ किया। उन्हीं की प्रेरणा और प्रयास से कई और हिंदी पत्रिकाओं का जन्म हुआ।

हिंदी को मालवीय जैसा और एक हिंदी सेवा प्राप्त हुआ जिनका नाम है राजर्षी पुरुषोत्तम दास टण्डन। उनकी हिंदी भी अप्रतिम है। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन के कर्ताधर्ता थे और उनसे हिंदी प्रचार के कार्य को बड़ी गति मिली टण्डनजी ने अपना सारा जीवन हिंदी की सेवा में अर्पित कर दिया था। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान देने के लिए उन्होंने कठिन परिश्रम किया। इन्होंने वाराणसी के प्रागंण मे सन 1910 में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। फिर 1918 में उन्होंने 'हिंदी विद्यापीठ' और 1947 में 'हिंदी रक्षक दल' की स्थापना की। टण्डनजी हिंदी को देश

की आजादी के पहले 'आजादी प्राप्त करने का' और आजादी के बाद 'आजादी को बनाये रखने का' साधन मानते थे। वे अपने भाषण में हिंदी का बहुत आकर्षक ढंग से महत्त्व बताया ताकि मन में हिंदी भाषा के लिए प्रेम जाग जाए और देशभर में हिंदी का ही प्रचार-प्रसार हो।

भारतीय संविधान सभा के अध्यक्षा के रूप में हिंदी को उचित स्थान दिलाने का श्रेय डॉ.राजेंद्र प्रसाद जी को जाता है। उन्होंने ही भारतीय संविधान की भारतीय भाषाओं में परिभाषिक कोष और तैयार करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद से उन्होंने जो हिंदी की सेवा की उसका विशेष महत्व है। उनके कार्यकाल में सरकारी स्तर पर हिंदी को मान्यता मिली।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास में अतुलनीय योगदान देनेवाले काका कालेलकर जी ने एक जगह कहा, "यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है, तो वह जनता की भाषा में चलाना होेगा"7 कहकर जनता की भाषा की वकालत की। वे दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार के कर्णधार रहे। सन 1942 में वर्धा में जब हिंदुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना हुई तो उन्होंने 'हिंदुस्तानी' के लिए पूरे देश में भ'मण किया। इसी तरह केशवचंद्र सेन ने भी हिंदी के लिए अतुलनीय योगदान दिया। उनका मत था कि, "हिंदी के माध्यम से हम किसी व्यक्ति को ही नही अपितु उसकी आत्मा तक को स्पर्श करने की क्षमता रखते हैं क्योंकि हिंदी भारत के जनसामान्य की आत्मा में बसती है।"8 सन 18 मई 1949 में जब भारतीय संविधान सभा की बहस चल रही थी तब गोविंददास जी ने कहा था, "मैं व्यक्तिगतत रुप से चाहता हुँ कि - संविधान मौलिक रूप में हमारी मु'य भाषा में हो, अँग'ेजी में नहीं, जिससे हमारे भावी न्यायाधीश अपनी भाषा पर निर्भर हो सके, विदेशी भाषा पर नही।"9 भारतीय लोकसभा के सदस्य के रूप में उन्होंने हिंदी के प्रसार के लिए कई कदम उठाये जो हिंदी को राजभाषा का स्थान दिलाने में सहायक सिध्द हुए।

वर्षे 1942 से 1945 का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रा की लहर सबसे अधिक तीव' थी, ततब राष्ट्रभाषा से ओत-प्रोत जितनी रचनाएँ हिंदी में लिखी गई उतनी शायद और भाषा में इतनी व्यापक रूप से कभी नही लिखी गई। राष्ट्रभाषा प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अँग'ेजों को भारत छोड़ना पडा।

बि'टिश साम'ज्यवादी हिंदी को आम आदमी की भाषा मानते थे। खड़ी बोली गद्य को पनपाने का श्रेय उन्हें ही जाता है। समाजसुधारकों एवं पत्रकारों ने राष्ट्रीय पुनर्जागरण के लिए माध्यम के रूप में हिंदी को ेअपनाया और उसे आगे बढ़ाया। काँग'ेस ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान जनता से संवाद स्थापित करने के लिए हिंदी को चुना और उसे राष्ट्रभाषा की गरिमा दी।

संदर्भ :-

1) हिंदी भाषा का इतिहास - आ.रामचंद्र शुक्ल
2) हिंदी भाषा : विकास और विश्लेषण - डॉ.चंद्रभान रावत
3) भारतीय आर्य भाषा और हिंदी (1954)
4) हिंदी भाषा की उत्पत्ति - महावीरप्रसाद द्विवेदी
5) हिंदी भाषा और साहित्तय का विवेचनात्मक इतिहास - सूर्यकांत शास्त्री
6) हिंदी भाषा और साहित्य - श्यामसुंदर दास
7) हिंदी भाष और साहित्य का इतिहास - रामस्वरूप चतुर्वेदी
8) हिंदी भाषा और उसके साहित्य का इतिहास - आयोध्यासिंह उपाध्याय हरिओम
9) हिंदी भाषा उद्भव और विकास - उदयनारायण तिवारी